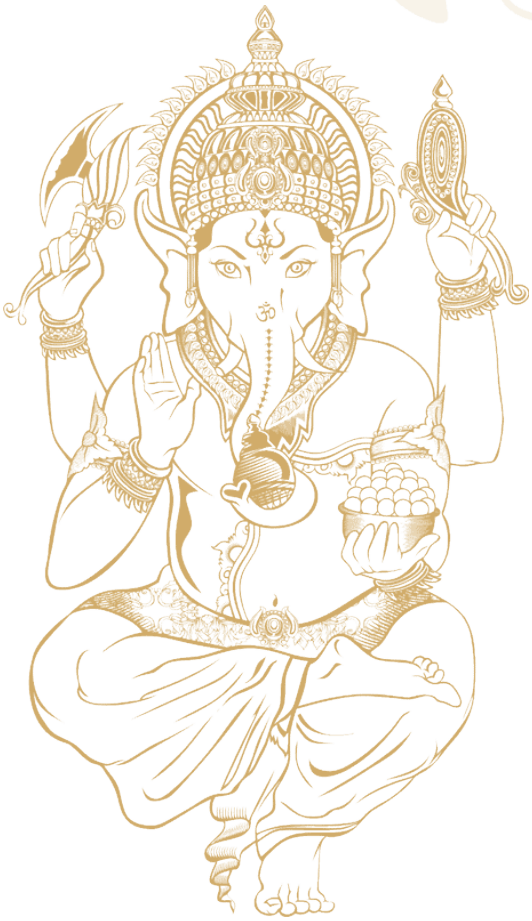

Mr.samridhi Trivedi

24 Nov 2006

01:34 AM

Bokaro

Model: Web-MyKundli

Order No: 119825501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**23-24/11/2006**
दिन	गुरु-शुक्रवार
जन्म समय	**01:34:00 घंटे**
इष्ट	48:39:44 घटी
स्थान	**Bokaro**
राज्य	Jharkhand
देश	India

अक्षांश	23:51:00 उत्तर
रेखांश	86:02:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:14:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	01:48:08 घंटे
वेलान्तर	00:13:42 घंटे
साम्पातिक काल	05:58:44 घंटे
सूर्योदय	06:06:06 घंटे
सूर्यास्त	16:58:20 घंटे
दिनमान	10:52:14 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	07:26:16 वृश्चिक
लग्न के अंश	05:45:32 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कन्या - बुध
राशि-स्वामी	**धनु - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**मूल - 4**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	शूल
करण	गर
गण	राक्षस
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भी-भीनी
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1928	मार्गशीर्ष	3
पंजाबी	संवत : 2063	मार्गशीर्ष	9
बंगाली	सन् : 1413	मार्गशीर्ष	8
तमिल	संवत : 2063	कार्तिगई	9
केरल	कोल्लम : 1182	वृश्चिकम	8
नेपाली	संवत : 2063	मार्गशीर्ष	9
चैत्रादि	संवत : 2063	मार्गशीर्ष	शुक्ल 4
कार्तिकादि	संवत : 2063	मार्गशीर्ष	शुक्ल 4

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 3
तिथि समाप्ति काल _____: 28:41:22
जन्म तिथि _____: 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: मूल
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 28:15:32 घंटे
जन्म योग _____: मूल
सूर्योदय कालीन योग ____: धृति
योग समाप्ति काल _____: 21:06:13 घंटे
जन्म योग _____: शूल
सूर्योदय कालीन करण ____: तैतिल
करण समाप्ति काल _____: 16:47:55 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 54:29:36
भभोग _____: 61:13:25
भोग्य दशा काल _____: केतु 0 वर्ष 9 मा 9 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

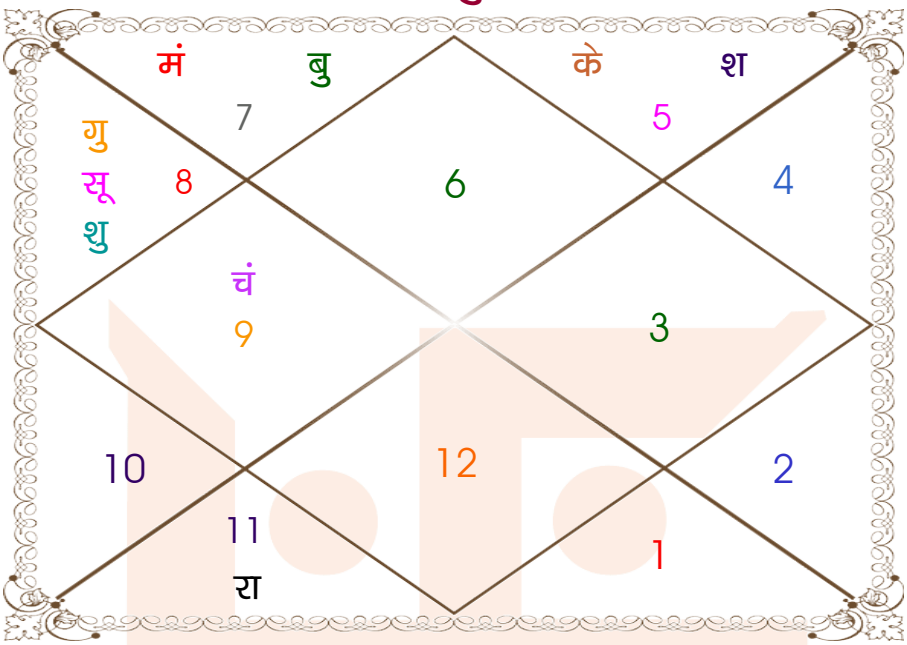

चन्द्र कुंडली

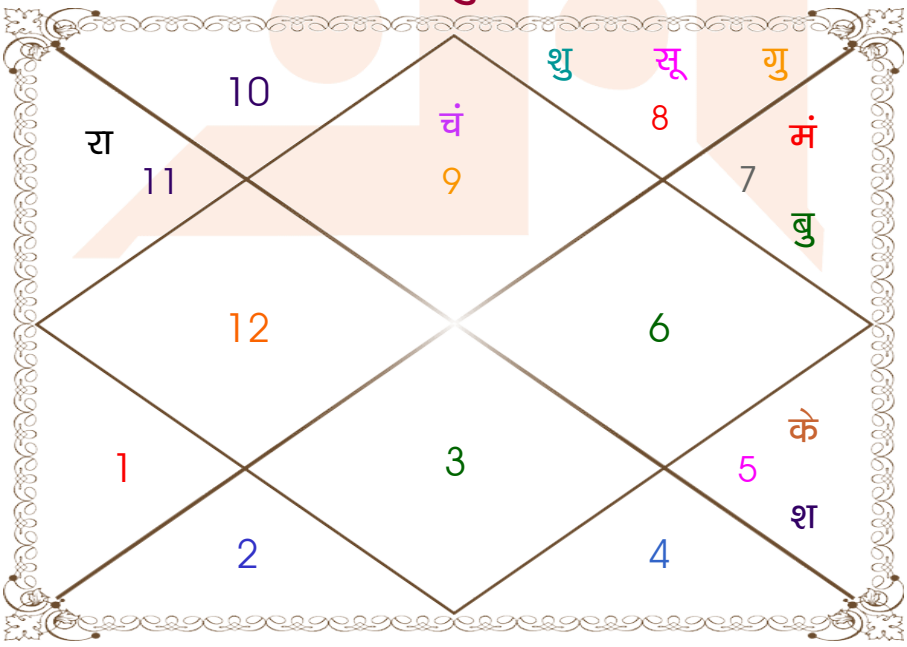

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

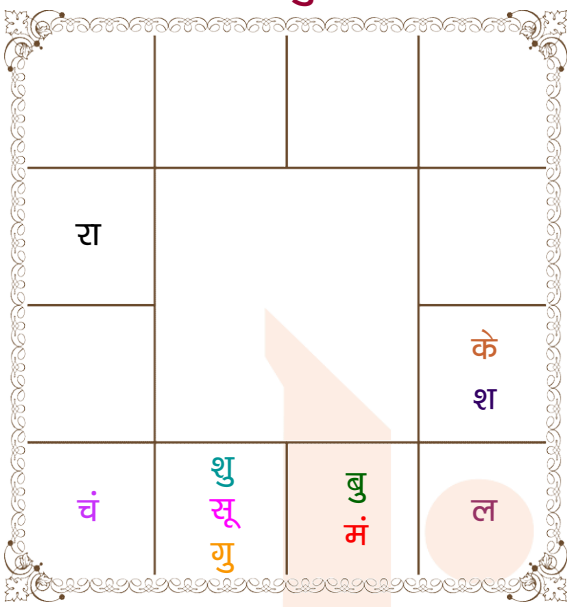

लग्न कुंडली

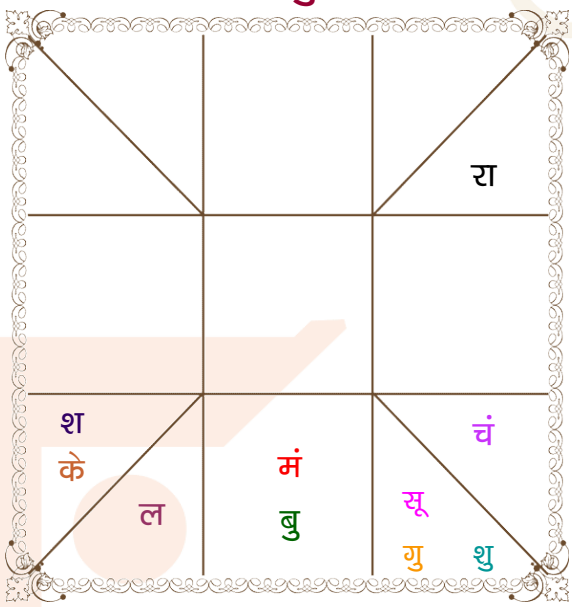

विंशोत्तरी
केतु 0वर्ष 9मा 9दि

केतु

24/11/2006

03/09/2120

केतु	03/09/2007
शुक्र	03/09/2027
सूर्य	02/09/2033
चन्द्र	03/09/2043
मंगल	02/09/2050
राहु	02/09/2068
गुरु	02/09/2084
शनि	04/09/2103
बुध	03/09/2120

योगिनी
उल्का 0वर्ष 7मा 29दि

धान्या

24/07/2025

23/07/2028

धान्या	23/10/2025
भ्रामरी	22/02/2026
भद्रिका	24/07/2026
उल्का	22/01/2027
सिद्धा	24/08/2027
संकटा	23/04/2028
मंगला	23/05/2028
पिंगला	23/07/2028

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	05:45:32	330:10:06	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	---
सूर्य			वृश्चि	07:26:16	01:00:40	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	केतु	मित्र राशि
चंद्र			धनु	11:51:28	13:08:38	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	सम राशि
मंगल		अ	तुला	27:22:45	00:41:47	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	सम राशि
बुध			तुला	17:48:33	00:50:52	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	सूर्य	मित्र राशि
गुरु		अ	वृश्चि	05:57:58	00:13:21	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	मित्र राशि
शुक्र		अ	वृश्चि	14:12:32	01:15:20	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	सम राशि
शनि			सिंह	00:58:34	00:01:22	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	शत्रु राशि
राहु	व		कुंभ	28:38:29	00:10:37	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	28:38:29	00:10:37	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	मंगल	शत्रु राशि
हर्ष			कुंभ	16:51:40	00:00:11	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	शुक्र	---
नेप			मक	23:15:37	00:00:52	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	सूर्य	---
प्लूटो			धनु	01:40:45	00:02:04	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
दशम भाव			मिथु	05:45:28	--	मृगशिरा	--	5	बुध	मंगल	चंद्र	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:57:13

लग्न-चलित

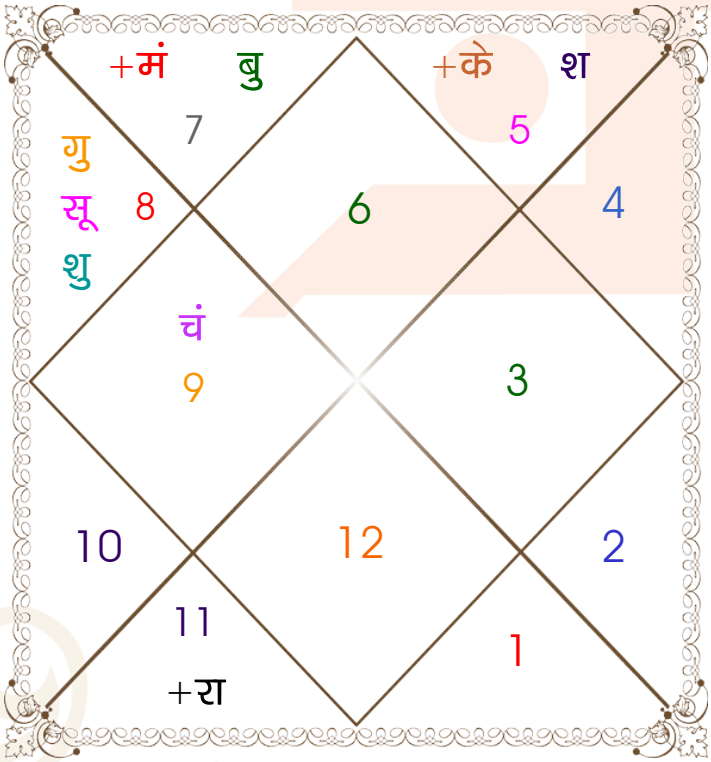

चन्द्र कुंडली

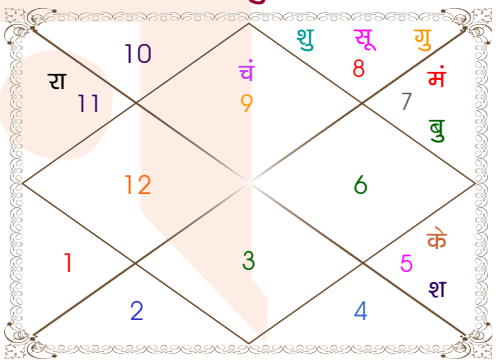

नवमांश कुंडली

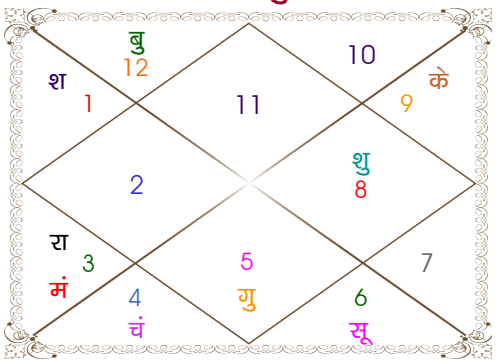

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	20:45:31	कन्या	05:45:32
2	कन्या	20:45:31	तुला	05:45:30
3	तुला	20:45:30	वृश्चिक	05:45:29
4	वृश्चिक	20:45:29	धनु	05:45:28
5	धनु	20:45:29	मकर	05:45:29
6	मकर	20:45:30	कुम्भ	05:45:30
7	कुम्भ	20:45:31	मीन	05:45:32
8	मीन	20:45:31	मेष	05:45:30
9	मेष	20:45:30	वृष	05:45:29
10	वृष	20:45:29	मिथुन	05:45:28
11	मिथुन	20:45:29	कर्क	05:45:29
12	कर्क	20:45:30	सिंह	05:45:30

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	05:45:32
2	तुला	04:29:12
3	वृश्चिक	04:53:20
4	धनु	05:45:28
5	मकर	06:37:08
6	कुम्भ	07:00:48
7	मीन	05:45:32
8	मेष	04:29:12
9	वृष	04:53:20
10	मिथुन	05:45:28
11	कर्क	06:37:08
12	सिंह	07:00:48

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली

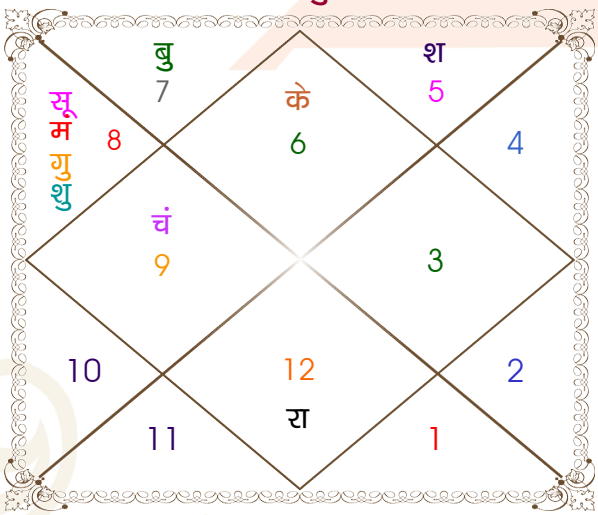

भाव कुंडली

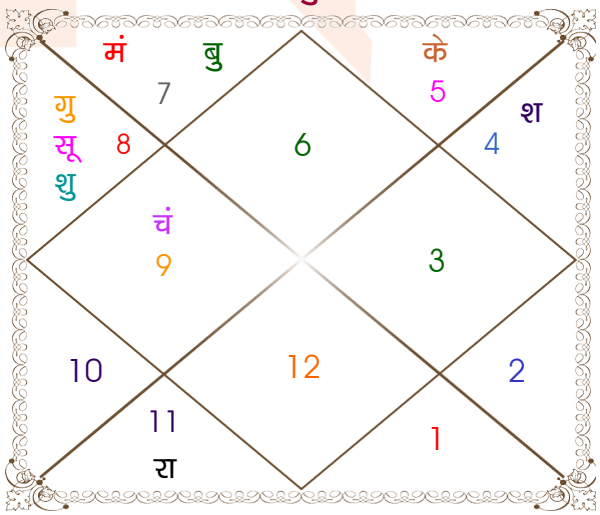

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 0 वर्ष 9 मास 9 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
24/11/2006		03/09/2007		03/09/2027		02/09/2033		03/09/2043	
03/09/2007		03/09/2027		02/09/2033		03/09/2043		02/09/2050	
	00/00/0000	शुक्र	02/01/2011	सूर्य	21/12/2027	चंद्र	03/07/2034	मंगल	30/01/2044
	00/00/0000	सूर्य	02/01/2012	चंद्र	21/06/2028	मंगल	01/02/2035	राहु	16/02/2045
	00/00/0000	चंद्र	02/09/2013	मंगल	27/10/2028	राहु	02/08/2036	गुरु	23/01/2046
	00/00/0000	मंगल	02/11/2014	राहु	20/09/2029	गुरु	02/12/2037	शनि	04/03/2047
	00/00/0000	राहु	02/11/2017	गुरु	09/07/2030	शनि	04/07/2039	बुध	29/02/2048
	00/00/0000	गुरु	03/07/2020	शनि	21/06/2031	बुध	02/12/2040	केतु	27/07/2048
	00/00/0000	शनि	03/09/2023	बुध	27/04/2032	केतु	03/07/2041	शुक्र	26/09/2049
	24/11/2006	बुध	03/07/2026	केतु	02/09/2032	शुक्र	04/03/2043	सूर्य	01/02/2050
बुध	03/09/2007	केतु	03/09/2027	शुक्र	02/09/2033	सूर्य	03/09/2043	चंद्र	02/09/2050

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
02/09/2050		02/09/2068		02/09/2084		04/09/2103		03/09/2120	
02/09/2068		02/09/2084		04/09/2103		03/09/2120		25/11/2126	
राहु	15/05/2053	गुरु	21/10/2070	शनि	06/09/2087	बुध	30/01/2106	केतु	30/01/2121
गुरु	09/10/2055	शनि	03/05/2073	बुध	16/05/2090	केतु	27/01/2107	शुक्र	01/04/2122
शनि	15/08/2058	बुध	09/08/2075	केतु	25/06/2091	शुक्र	27/11/2109	सूर्य	07/08/2122
बुध	03/03/2061	केतु	15/07/2076	शुक्र	24/08/2094	सूर्य	04/10/2110	चंद्र	08/03/2123
केतु	22/03/2062	शुक्र	16/03/2079	सूर्य	06/08/2095	चंद्र	04/03/2112	मंगल	04/08/2123
शुक्र	22/03/2065	सूर्य	02/01/2080	चंद्र	06/03/2097	मंगल	01/03/2113	राहु	22/08/2124
सूर्य	13/02/2066	चंद्र	03/05/2081	मंगल	15/04/2098	राहु	19/09/2115	गुरु	28/07/2125
चंद्र	15/08/2067	मंगल	09/04/2082	राहु	20/02/2101	गुरु	25/12/2117	शनि	06/09/2126
मंगल	02/09/2068	राहु	02/09/2084	गुरु	04/09/2103	शनि	03/09/2120	बुध	25/11/2126

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 0 वर्ष 9 मा 7 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
03/09/2023		03/07/2026		03/09/2027		21/12/2027		21/06/2028	
03/07/2026		03/09/2027		21/12/2027		21/06/2028		27/10/2028	
बुध	27/01/2024	केतु	28/07/2026	सूर्य	08/09/2027	चंद्र	05/01/2028	मंगल	28/06/2028
केतु	27/03/2024	शुक्र	07/10/2026	चंद्र	17/09/2027	मंगल	16/01/2028	राहु	17/07/2028
शुक्र	16/09/2024	सूर्य	29/10/2026	मंगल	24/09/2027	राहु	12/02/2028	गुरु	03/08/2028
सूर्य	07/11/2024	चंद्र	03/12/2026	राहु	10/10/2027	गुरु	08/03/2028	शनि	24/08/2028
चंद्र	01/02/2025	मंगल	28/12/2026	गुरु	25/10/2027	शनि	06/04/2028	बुध	11/09/2028
मंगल	02/04/2025	राहु	02/03/2027	शनि	11/11/2027	बुध	01/05/2028	केतु	18/09/2028
राहु	05/09/2025	गुरु	28/04/2027	बुध	26/11/2027	केतु	12/05/2028	शुक्र	10/10/2028
गुरु	21/01/2026	शनि	04/07/2027	केतु	03/12/2027	शुक्र	12/06/2028	सूर्य	16/10/2028
शनि	03/07/2026	बुध	03/09/2027	शुक्र	21/12/2027	सूर्य	21/06/2028	चंद्र	27/10/2028

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
27/10/2028		20/09/2029		09/07/2030		21/06/2031		27/04/2032	
20/09/2029		09/07/2030		21/06/2031		27/04/2032		02/09/2032	
राहु	15/12/2028	गुरु	29/10/2029	शनि	02/09/2030	बुध	04/08/2031	केतु	04/05/2032
गुरु	28/01/2029	शनि	15/12/2029	बुध	22/10/2030	केतु	23/08/2031	शुक्र	26/05/2032
शनि	21/03/2029	बुध	25/01/2030	केतु	11/11/2030	शुक्र	13/10/2031	सूर्य	01/06/2032
बुध	06/05/2029	केतु	11/02/2030	शुक्र	08/01/2031	सूर्य	29/10/2031	चंद्र	12/06/2032
केतु	25/05/2029	शुक्र	01/04/2030	सूर्य	25/01/2031	चंद्र	24/11/2031	मंगल	19/06/2032
शुक्र	19/07/2029	सूर्य	15/04/2030	चंद्र	23/02/2031	मंगल	12/12/2031	राहु	08/07/2032
सूर्य	05/08/2029	चंद्र	10/05/2030	मंगल	15/03/2031	राहु	27/01/2032	गुरु	25/07/2032
चंद्र	01/09/2029	मंगल	27/05/2030	राहु	06/05/2031	गुरु	09/03/2032	शनि	15/08/2032
मंगल	20/09/2029	राहु	09/07/2030	गुरु	21/06/2031	शनि	27/04/2032	बुध	02/09/2032

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
02/09/2032		02/09/2033		03/07/2034		01/02/2035		02/08/2036	
02/09/2033		03/07/2034		01/02/2035		02/08/2036		02/12/2037	
शुक्र	02/11/2032	चंद्र	27/09/2033	मंगल	16/07/2034	राहु	25/04/2035	गुरु	06/10/2036
सूर्य	20/11/2032	मंगल	15/10/2033	राहु	17/08/2034	गुरु	07/07/2035	शनि	22/12/2036
चंद्र	20/12/2032	राहु	30/11/2033	गुरु	14/09/2034	शनि	01/10/2035	बुध	01/03/2037
मंगल	11/01/2033	गुरु	09/01/2034	शनि	18/10/2034	बुध	18/12/2035	केतु	30/03/2037
राहु	06/03/2033	शनि	27/02/2034	बुध	17/11/2034	केतु	19/01/2036	शुक्र	19/06/2037
गुरु	24/04/2033	बुध	11/04/2034	केतु	30/11/2034	शुक्र	19/04/2036	सूर्य	13/07/2037
शनि	21/06/2033	केतु	28/04/2034	शुक्र	04/01/2035	सूर्य	17/05/2036	चंद्र	23/08/2037
बुध	12/08/2033	शुक्र	18/06/2034	सूर्य	15/01/2035	चंद्र	01/07/2036	मंगल	20/09/2037
केतु	02/09/2033	सूर्य	03/07/2034	चंद्र	01/02/2035	मंगल	02/08/2036	राहु	02/12/2037

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	7
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 7
शत्रु अंक	1, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	धन, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	83%	पराक्रम, भाग्योदय, धन
मोती	चंद्र	72%	सुख, धनार्जन
पुखराज	गुरु	50%	पराक्रम, सुख, दम्पति
नीलम	शनि	47%	व्यय, सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	22%	व्यय, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	6%	पराक्रम हानि, व्यय
गोमेद	राहु	3%	शत्रु व रोग, व्यय
मूंगा	मंगल	0%	धन हानि, दुर्घटना, पराक्रम हानि

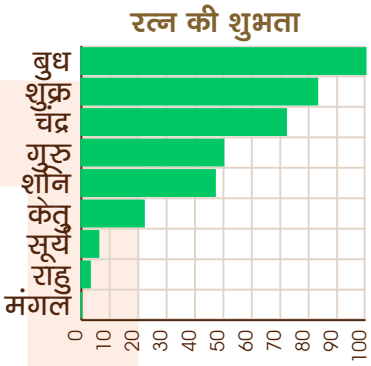

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	03/09/2007	0%	59%	9%	100%	50%	89%	22%	0%	47%
शुक्र	03/09/2027	0%	59%	0%	100%	50%	95%	55%	16%	34%
सूर्य	02/09/2033	31%	78%	9%	100%	56%	70%	22%	0%	0%
चंद्र	03/09/2043	19%	84%	0%	100%	50%	83%	47%	0%	0%
मंगल	02/09/2050	19%	78%	22%	92%	56%	83%	47%	0%	34%
राहु	02/09/2068	0%	59%	0%	100%	50%	89%	55%	28%	0%
गुरु	02/09/2084	19%	78%	9%	92%	62%	70%	47%	3%	22%
शनि	04/09/2103	0%	59%	0%	100%	50%	89%	61%	16%	0%
बुध	03/09/2120	19%	59%	0%	100%	50%	89%	47%	3%	22%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	सुख
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	अल्प बचत

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगी।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव पर होने से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगी तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्यों एवं पराक्रम से भाग्य का निर्माण करेंगी तथा जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगी।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाएं रखेंगी तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगी साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए। इससे आप

प्रसन्नतापूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगी तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक यात्रा बहुत करता है पर आंशिक रूप में ही सफलता मिलती है। कभी रोग व्याधि जातक के शरीर में लग जाती है, जिसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक का जीवन मानसिक रूप से थोड़ा बहुत परेशान रहता है एवं शोक दुःख आदि भी घेर लेता है। जातक को प्रेम प्रसंग में विशेष रूप से सफलता नहीं मिलती है। मनोभिलाषित पत्नी प्रायः नहीं मिलती। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का चरित्र थोड़ा सन्देहास्पद रहता है। जातक के मन में आंशिक रूप से निराशा की भावना जागृत हो उठती है और अपने मन में दूसरों के प्रति शत्रुता पालकर रखने वाला होता है। धर्म की आंशिक क्षति होती है। जातक कभी-कभी बुरा स्वप्न भी देखता है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक राजदण्ड का कभी भागीदार बन जाता है। जातक का जीवन शत्रुओं के षड्यन्त्र से घिरा रहता है और उस षड्यन्त्र में आंशिक रूप से शत्रुओं की विजय होती है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को थलसेना में नहीं जाना विशेष रूप से हितकर है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक एक अच्छा दलील देने वाला एवं वकालत करने वाला तथा राजनीति के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।

12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुडली में बुध और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराक्रमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्ययोगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता की वे अनुभूति करेंगे। विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी कार्यों में आप एक दूसरे का प्रेम पूर्वक सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी तथा आपसी संबंध भी मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर संबंधों में कुछ कटुता एवं तनाव का वातावरण बनेगा लेकिन कुछ समय के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप हमेशा सुख दुःख में उनका साथ देंगी एवं यथाशक्ति अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आप मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करेंगी।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संही, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराक्रमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ठग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ठगने वाला होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(03/09/2007 - 03/09/2027)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 03/09/2007 को आरम्भ होकर 03/09/2027 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र तृतीय भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ- बृष और तुला हैं। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद, फैशन डिजाइनिंग तथा जीवन के आनन्द का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है तथा नवम भाव पर इसकी दृष्टि है और इस भाव पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है।

तृतीय भाव मानसिकता, बुद्धि, साहस, दृढ़ता, छोटे भाई-बहनों, छोटी यात्रा, गमनागमन, पत्राचार, अफवाह, हाथ, गले, कन्धों, हँसली तथा स्नायु तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है और इसके फलस्वरूप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करने में साहस की प्राप्ति होगी। आपको कोई बड़ी या मामूली स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और इस दशा के दौरान आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र के कारण आपको समृद्धि तथा संपत्ति की प्राप्ति होगी और आपमें कठिनाइयों का सामना करने का साहस उत्पन्न होगा। इस दशा के दौरान आपको कुछ अचल संपत्ति प्राप्त होने की संभावना है और आप भोग-विलास तथा आराम संबंधी वस्तुओं पर व्यय करेंगे। आपको उपलब्धियों की प्राप्ति और संपत्ति की वृद्धि में बाधा आएगी तथा आपके ऊपर ऋण का बोझ पड़ सकता है या नुकसान हो सकता है जिसके लिए आपको आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिए।

व्यवसाय :

आपकी मानसिक शक्ति अच्छी है इसलिए आप संगीत, गायन, नृत्य और ललित कला का आनन्द लेंगे। आप नाटकीय गतिविधियों या ललित कला से संबंधित गतिविधियों से धनोपार्जन और जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप व्यावसायिक दृष्टि से सुदृढ़ हैं और अपने पिता के व्यवसाय में शामिल हो सकते हैं क्योंकि आपकी जन्म कुण्डली में तृतीय भाव में में स्थित शुक्र की दृष्टि नवम् भाव पर है।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण होगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आपको बड़ों का आशीर्वाद मिलेगा किन्तु अपने भाई-बहनों के साथ मतभेद भी

हो सकता है जिससे परिवार में तनाव उत्पन्न होगा।

अंर्तदशा :- शुक्र - बुध
(03/09/2023 - 03/07/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/09/2007 को प्रारंभ हुई थी और वद 03/09/2027 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 03/09/2023 जो आपके लिए 03/07/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। द्वितीय भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के 8वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बुद्धिमान होंगे। व्यापार में दक्षता बढ़ेगी। धनवान बनेंगे। धार्मिक और दार्शनिक विषयों का ज्ञान बढ़ेगा। दान धर्म में धन खर्च करेंगे लेकिन कमाई भी अच्छी होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 6 रत्ती का पन्ना सोने की अंगूठी में बुधवार के दिन प्रातःकाल मध्यमा अंगुली में प्रार्थना के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - केतु
(03/07/2026 - 03/09/2027)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/09/2007 को प्रारंभ हुई थी और 03/09/2027 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 03/07/2026 को प्रारंभ होकर 03/09/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न यह किसी राशि का स्वामी होता है।

द्वादश भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के 6ठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बेचैन रहेगे, बिना उद्देश्य के विभिन्न स्थानों पर भटकेंगे। विदेश भी जा सकते हैं। निम्न श्रेणी के लोगों से मित्रता हो सकती है जो हानिकारक साबित हो सकती है। व्यर्थ की यात्राओं के कारण पैतृक धन का नाश हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- भूरा कुत्ता पालें।

महादशा :- सूर्य
(03/09/2027 - 02/09/2033)

सूर्य की महादशा 03/09/2027 को आरम्भ तथा 6 वर्ष की अवधि के बाद 02/09/2033 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। सूर्य साहस, शक्ति, आत्म विश्वास, सामर्थ्य ओर प्रभुत्व को सूचित करता है जबकि तृतीय भाव ऊर्जस्विता, शक्ति, छोटी यात्राओं तथा मानसिक अभिरुचि का प्रतिनिधित्व करता है। इस दशा के दौरान आपको सुख-सम्पत्ति, अच्छे स्वास्थ्य तथा लाभदयक रोजगार की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप कार्यों का सम्पादन पूरी ऊर्जास्विता तथा शक्ति से करेंगे। आपकी जीवनी-शक्ति अति उत्तम होगी और आप प्रसन्न तथा आशावादी होंगे।

किन्तु, शुभ दशा का सर्वोत्तम लाभ लेने के लिये आपको अति क्रियाशीलता का परिहार करना चाहिए। स्वास्थ्य संबधी कुछ मामूली समस्याएं हो सकती हैं।

अर्थ :

आपको रिश्तेदारों तथा पड़ोसियों से लाभ मिलेगा। आपको छोटी यात्राओं तथा यातायात के सभी रूपों से लाभ होगा। इस दशा के दौरान किया गया कोई भी अनुबन्ध अथवा सौदा लाभदायक होगा। इस दशा के दौरान आर्थिक दृष्टि से सफल होंगे। प्रॉपर्टी डीलिंग में कुछ मामूली हानि हो सकती है।

व्यवसाय :

नौकरीपेशा लोग इस दशा में बहुत अच्छा करेंगे। कार्य-क्षेत्र में आपकी स्थिति उत्तम होगी। आपको उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा और आपकी पदोन्नति भी हो सकती है। आपको अपने कार्य अथवा नौकरी में अत्यधिक लाभ होगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों को प्रतिद्वन्द्वियों तथा साझेदारों से लेन-देन में सावधानी बरतनी चाहिए। कार्यों तथा जीवन-वृत्ति से सम्बन्धित छोटी यात्राओं में कुछ रुकावटें आ सकती हैं। आपके मातहत और सहयोगी कर्मचारी आपका सहयोग करेंगे। व्यवसाय की प्रगति व विकास के लिए यह दशा उत्तम है। कमीशन एजेण्टों तथा दलालों के लिये यह दशा शुभ है।

कुटुम्ब :

आपके बच्चों के लिये यह दशा शुभ तथा आर्थिक दृष्टि से सफल सिद्ध होगी। आपकी पत्नी भाग्यशाली होंगी, उन्हें लम्बी यात्रा का अवसर मिलेगा, आध्यात्मिकता में उनकी रुचि होगी और उन्हें धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी माता को धन प्राप्त होगा, किन्तु उनका अत्यधिक व्यय भी हो सकता है। धार्मिक तथा दान-पुण्य के कार्यों पर व्यय की सम्भावना है। आपके पिता को सारी सुख-सुविधाएं तथा साझेदारों से लाभ मिलेगा। आपके बड़े भाई-बहनों के लिये समय अनुकूल रहेगा और वे आध्यात्मिक तथा बौद्धिक कार्यों में रुचि

रखेंगे।

शिक्षा :

आपकी वेदान्त तथा अन्य वैदिक साहित्य में रुचि होगी। आप संस्कृत भाषा का अध्ययन कर सकते हैं। तकनीकी विषय भी लाभदायक हो सकते हैं।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(03/09/2027 - 21/12/2027)

आपके लिए सूर्य की महादशा 03/09/2027 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 21/12/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप साहस से कार्य करेंगे, क्योंकि आप हिम्मती हैं। आप में हर प्रकार का कार्य करने के लिए भरपूर ऊर्जा रहेगी। साथ ही आप सृजनशील और साधनसंपन्न होंगे। सूर्य की नवम भाव पर दृष्टि के कारण धर्म और अध्यात्म में रुचि रहेगी। कुछ छोटी यात्राएं हो सकती हैं जो सफल रहेंगी। सशस्त्र सेनाओं में कार्यरत व्यक्तियों के लिए भाग्यशाली समय है। शत्रुओं को परास्त करने में सफल रहेंगे। आपके पिता का व्यापार फले-फूलेगा। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मामा की ओर के संबंधी सफलता प्राप्त करेंगे। संतान के लिए लाभ का समय है, वे शिक्षा के अतिरिक्त गतिविधियो में सफलता अर्जित करेंगे।

अंतर्दशा की अवधि में स्वास्थ्य से संबंधित किसी परेशानी की आशंका नहीं है। जटिल रोगों से ग्रस्त जातक आराम प्राप्त करेंगे। लाभ के लिए सूर्य के मंत्र का जाप करें।

ॐ घृणि सूर्याय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(21/12/2027 - 21/06/2028)

आपकी सूर्य की महादशा 03/09/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 21/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप धन, जायदाद, वाहन आदि प्राप्त करेंगे। आप धन-धान्य से पूर्ण होकर प्रसन्न रहेंगे। आपके फैसलों पर आपकी माता का प्रभाव पड़ेगा। आप सुख-शांति और सब सुविधाओं से युक्त रहेंगे। वाहन की प्राप्ति संभावित है। आप मकान का निर्माण या वर्तमान मकान का नवीनीकरण करेंगे। जायदाद संबंधी गतिविधियां अधिक रहेंगी।

आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी। जीवनसाथी के व्यवसाय में बदलाव आ सकता है। सेवारत जातकों को लाभ होगा, मगर उतार-चढ़ाव होते रहेंगे। आपके विरोधी अधिक हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। आपके पिता के भाग्य में अचानक परिवर्तन हो सकता है। आपका निवास खुशियों और शांति से भरपूर रहेगा। आपकी रुचि बागबानी में हो सकती है।

स्वास्थ्य आपका उत्तम रहेगा मगर खांसी से बचने के लिए एलर्जी वाले पदार्थों से दूर रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए सोमवार के दिन व्रत रखें और सफेद वस्तुओं का दान दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(21/06/2028 - 27/10/2028)

आपकी सूर्य की महादशा 03/09/2027 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 27/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आर्थिक तौर पर आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी। स्वभाव से दयालु होने के कारण पैसा अधिक खर्च करेंगे। अधिकांशतः आपकी आय स्वयं की कमाई से होगी। जीवनसाथी द्वारा भी लाभ संभव है। जमीन-जायदाद से भी लाभ हो सकता है। पड़ोसी कुछ परेशानी उत्पन्न कर सकते हैं। नयी जान-पहचान वालों से थोड़ा सावधान रहें।

माता के कार्य सुचारु रहेंगे। उन्हें छोटी-मोटी चोटों के विरुद्ध सावधान रहना चाहिए। पिता के स्वास्थ्य से कुछ चिंता हो सकती है मगर उनकी प्रतिरोधक शक्ति प्रबल रहेगी। छोटे भाई-बहनों की निरर्थक यात्राएं हो सकती हैं, उनका स्थानांतरण हो सकता है। बड़े भाई-बहनों की कार्य में व्यस्तता बढ़ेगी। विद्यार्थी प्रगति करेंगे। तकनीकी क्षेत्र विशेषतः फलप्रद रहेगा। कटुवचनों से बचें और गृहशांति को हानि न पहुंचाएं।

नेत्र और गले की व्याधिओं के विरुद्ध सावधान रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल दाल का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(27/10/2028 - 20/09/2029)

आपके लिए सूर्य की महादशा 03/09/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 27/10/2028 को प्रारंभ होकर 20/09/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। विरोधिओं और शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। मुकदमे में जीत होगी। यात्राएं होंगी, विदेश भी जा सकते हैं। अप्रत्याशित खर्चे बढ़ सकते हैं। कार्यों और प्रतिस्पर्धा में सफल रहेंगे। जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता को विदेशियों से संपर्क द्वारा लाभ होगा। माता की इच्छाएं पूर्ण होंगी। भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आएंगे, अप्रत्याशित घटनाएं घटेंगी, मगर धन का लाभ होगा। आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी, उनकी शिक्षा में उन्नति होगी। अगर वे सेवारत हैं तो घर से बाहर जा सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो बहुत भाग्यशाली रहेंगे। सरकार या उच्चाधिकारियों से लाभ होगा। व्यापारियों का समय भी उत्तम रहेगा। परामर्शदाताओं के प्रयास फलीभूत होंगे। राजनीतिज्ञ भी खूब उन्नति करेंगे।

फोड़ा, घाव, दांतों की मामूली समस्याओं के प्रति सावधान रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(20/09/2029 - 09/07/2030)

आपके लिए सूर्य की महादशा 03/09/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 20/09/2029 को प्रारंभ होकर 09/07/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों, संबंधियों और पड़ौसियों से सम्मान प्राप्त होगा। वाक्शक्ति द्वारा लाभ हो सकता है। भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। छोटी यात्राएं हो सकती हैं। आप व्याख्यान दे सकते हैं। अध्यात्म में रुचि रहेगी। अनुबंधों और भागीदारी के लिए समय उत्तम है। अविवाहितों का विवाह हो सकता है। आकांक्षाओं की पूर्ति, सम्मान, उच्चाधिकारियों की प्रशंसा और धन में वृद्धि की संभावना है।

आपके जीवनसाथी या व्यापार के साझेदार का समय भाग्यशाली रहेगा। आपके पिता को भागीदारी से लाभ होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता के शुभ कार्यों में खर्चे बढ़ सकते हैं। उन्हें स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आपके भाई-बहनों का समय उत्तम रहेगा। आपकी संतान को मान-सम्मान मिलेगा और धनार्जन उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यस्थल पर सुविधाएं उत्तम होंगी। परामर्शदाताओं के स्पर्धी निर्बल रहेंगे। व्यापारी चहुंमुखी आय प्राप्त करेंगे।

कान, शरीर के ऊपरी भाग और स्नायुतंत्र का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं वृहस्पतये नमः